TDC-1st. Subsidiary

सामाजिक व्यवस्था के तत्व (Elements of Social System)—

सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करने में किन तत्वों का योगदान होता है? इसे पार्सन्स (Parsons) ने सामाजिक व्यवस्था के दो पक्षों द्वारा स्पष्ट किया है। इन्हें हम सामाजिक व्यवस्था का संरचनात्मक पक्ष तथा संस्थात्मक पक्ष (Structural and Institutional aspect) कहते हैं।

सामाजिक व्यवस्था का संरचनात्मक पक्ष (Structural Aspect)—

पार्सन्स के अनुसार सामाजिक व्यवस्था की संरचना का निर्माण प्रमुख रूप से चार तत्वों द्वारा होता है।

① नातेदारी व्यवस्था—

समाज की संरचना में व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले पद और उनसे सम्बन्धित भूमिका का महत्व सबसे अधिक होता है। नातेदारी व्यवस्था (Kinship System) यह निश्चित करती है कि परिवार और समूह में व्यक्ति को कौन सा पद मिलेगा तथा समाज उससे किस प्रकार की भूमिका की आशा करेगा। इससे व्यक्ति की स्थिति तो निश्चित रहती ही है, साथ ही सामाजिक व्यवस्था में अनावश्यक ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा की सम्भावना भी कम हो जाती है।

② सामाजिक स्तरीकरण—

स्तरीकरण वह व्यवस्था है जिसके अनुसार समाज में कुछ व्यक्तियों को अन्य व्यक्तियों की तुलना में उच्च अथवा निम्न सामाजिक स्थिति तथा उससे सम्बद्ध अधिकार प्रदान किये जाते हैं।

Created By A-One Scanner

(3) शक्ति व्यवस्था —

समाज में सहयोगी और विरोधी सभी प्रकार के तत्व क्रियाशील रहते हैं। सामाजिक व्यवस्था का निर्माण इन दोनों प्रकार के तत्वों की सन्तुलित स्थिति से होता है। यह कार्य शक्ति-व्यवस्था (Power system) के माध्यम से होता है। समाज में कुछ व्यक्तियों को शक्ति तथा अधिकार प्रदान किये जाते हैं, उन्हें विभिन्न कर्ताओं के आचरणों को नियन्त्रित करने के अधिकार दिये जाते हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध कार्य करने वाले तत्वों पर अंकुश रखा जा सके। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत यह सम्पूर्ण कार्य एक निश्चित प्रणाली द्वारा किया जाता है।

(4) सामाजिक मूल्यों का एकीकरण —

सामाजिक व्यवस्था में उस समाज के प्रचलित मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। सामाजिक मूल्य वे तथ्य हैं जिनका एक विशेष समाज के सदस्यों के लिए एक विशेष अर्थ होता है और जिन्हें वे अपने जीवन के लिए उपयोगी मानते हैं। किसी व्यवस्था को संगठित रखने के मूल्यों का एकीकरण (Value integration) इसलिए आवश्यक है कि यही मूल्य व्यक्तियों के व्यवहारों और मनोवृत्तियों में समानता बनाये रखते हैं। मूल्यों में विभिन्नता उत्पन्न हो जाने से ही सामाजिक व्यवस्था के छिन्न-भिन्न हो जाने का खतरा पैदा हो जाता है।

Created By A-One Scanner